ग्रामीण क्षेत्र पर शासन चलाना

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कंपनी दीवान बन गई

» कंपनी की आमदनी और बंगाल का संकट

» स्थायी बंदोबस्त - 1793

» स्थायी बंदोबस्त की समस्याएँ और रैयतों की दशा

» महालवारी बंदोबस्त

» मुनरो व्यवस्था - रैयतवाड़ी

» यूरोप के लिए फ़सलें और भारतीय नील की माँग

» नील की खेती - निज और रैयती व्यवस्था

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. दीवान बनने के बाद कंपनी के सामने दो मुख्य चुनौतियाँ क्या थीं? संक्षिप्त उत्तर लिखो.

› याद करो: दीवान = क्षेत्र का आर्थिक नियंत्रण

› चुनौती 1: बढ़ते खर्चों के लिए काफी आमदनी जुटाना और ज़मीन का शासन चलाना

› चुनौती 2: ट्रेडिंग कंपनी के तौर पर ज़रूरत की चीज़ें खरीदते-बेचते रहना; पुराने स्थानीय सत्ताधारियों को नियंत्रित करना बिना उन्हें पूरी तरह खत्म किए

उत्तर – कंपनी को (1) राजस्व व्यवस्थित करके खर्चे पूरे करने थे, और (2) व्यापार जारी रखते हुए स्थानीय शक्तिशाली समूहों को नियंत्रित (नष्ट नहीं) करना था.

उदाहरण 2. 1765 के बाद कंपनी के खरीद-व्यापार के तरीके में क्या बदलाव आया? एक करोड़ मौतें किस घटना से जुड़ी हैं?

› पहले: ब्रिटेन से सोना-चाँदी आयात करके माल खरीदना

› बाद में: बंगाल के इकट्ठा राजस्व से ही निर्यात सामान खरीदना

› 1770 का अकाल: लगभग एक करोड़ लोग मरे; लगभग एक-तिहाई आबादी समाप्त हुई

उत्तर – कंपनी ने बंगाल के राजस्व से ही निर्यात खरीदना शुरू किया (ब्रिटेन से चाँदी लाने की ज़रूरत नहीं रही). 1770 के बंगाल अकाल में लगभग एक करोड़ लोग मरे.

उदाहरण 3. परमानेंट सेटलमेंट कब लागू हुआ? उसके दो कथित फायदे अंग्रेज़ों की नज़र से लिखो.

› साल: 1793; कॉर्नवालिस बंगाल के गवर्नर-जनरल

› फायदा 1: कंपनी को नियमित, तय राजस्व मिलता रहेगा

› फायदा 2: ज़मींदारों को ज़मीन सुधारने का प्रोत्साहन – क्योंकि राज्य की मांग नहीं बढ़ेगी, अतिरिक्त उपज उनका फायदा

उत्तर – 1793. उम्मीद किए गए फायदे: (1) कंपनी के लिए सुरक्षित नियमित राजस्व; (2) ज़मींदार भूमि सुधार में निवेश करेंगे क्योंकि राजस्व मांग नहीं बढ़ेगी.

उदाहरण 4. परमानेंट सेटलमेंट कंपनी और रैयतों दोनों के लिए कैसे समस्या बनी? दो-दो पॉइंट.

› कंपनी शुरू में: राजस्व इतना ज़्यादा कि ज़मींदारियाँ नीलाम हुईं; बाद में: कीमतें बढ़ने पर भी राजस्व नहीं बढ़ा सकी
› रैयत: अत्यधिक लगान, असुरक्षित काश्तकारी, महाजन का कर्ज़, पुश्तैनी ज़मीन से बेदखली
› ज़मींदार अक्सर निवेश की जगह लगान वसूली को प्राथमिकता देते; अंडर-टेनेंट कुचले गए (कोलब्रुक)

उत्तर – कंपनी: (1) शुरुआती चूक/नीलामी (2) बाद में तय राजस्व नहीं बढ़ा सकी. रैयत: (1) भारी असुरक्षित लगान (2) कर्ज़ और बेदखली; अंडर-टेनेंट बटाई/बेगारी में कुचले गए.

उदाहरण 5. महालवारी और परमानेंट सेटलमेंट में दो स्पष्ट अंतर लिखो.

› कौन चुकाता/वसूलता है: परमानेंट ज़मींदार; महालवारी गाँव का मुखिया
› क्या राजस्व तय है?: परमानेंट हमेशा के लिए तय; महालवारी समय-समय पर संशोधन संभव
› इकाई: परमानेंट ज़मींदारी संपदाएँ; महालवारी गाँव या गाँवों का समूह (महाल), विस्तृत सर्वेक्षण के बाद

उत्तर – (1) ज़मींदार बनाम गाँव का मुखिया राजस्व चुकाने/वसूलने वाला. (2) हमेशा के लिए तय बनाम महाल के फील्ड सर्वेक्षण से अनुमानित संशोधन-योग्य राजस्व.

उदाहरण 6. रैयतवाड़ी व्यवस्था कहाँ लागू हुई? मुनरो का 'पिता की भांति' विचार क्या था, और असलियत में क्या हुआ?

› क्षेत्र: दक्षिण भारत (टीपू युद्धों के बाद लिए इलाकों में रीड के प्रयोगों के बाद)
› आदर्श: अंग्रेज़ों को किसानों की पिता की तरह रक्षा करनी चाहिए; सावधान सर्वे के बाद सीधे किसानों से बंदोबस्त
› असलियत: अधिकारियों ने अत्यधिक राजस्व तय किया; किसान चुका नहीं पाए; भागे; गाँव वीरान हुए

उत्तर – दक्षिण भारत. मुनरो प्रत्यक्ष बंदोबस्त के ज़रिए रैयतों की पैतृक सुरक्षा चाहते थे, लेकिन अत्यधिक राजस्व आकलन से पलायन और वीरान गाँव हुए.

उदाहरण 7. भारतीय नील की यूरोपीय मांग 18वीं सदी के अंत में क्यों तेज़ी से बढ़ी? तीन कारण.

› ब्रिटेन में औद्योगीकरण कपास उत्पादन रंगाई की मांग
› नील को वोड के मुकाबले चमकदार नीले रंग के लिए पसंद किया गया
› वेस्ट इंडीज़/अमेरिका सप्लाई बाधित; विश्व नील उत्पादन 1783-1789 में आधा हुआ नए स्रोत की तलाश भारत/कंपनी का ज़ोर

उत्तर – ब्रिटेन में औद्योगिक कपास बूम; वोड के मुकाबले नील के चमकीले नीले रंग की पसंद; वेस्ट इंडीज़-अमेरिकी सप्लाई का पतन/बाधा (उत्पादन 1783-89 में आधा) ने मांग को भारतीय नील की ओर धकेला.

उदाहरण 8. निज खेती का विस्तार क्यों मुश्किल था? कम से कम तीन कारण लिखो. नील क्षेत्र का कितना हिस्सा निज के अंतर्गत था?

› उपजाऊ ज़मीन पहले से घनी आबादी वाली – सिर्फ छोटे प्लॉट उपलब्ध; बड़े भू-खंड चाहिए
› मज़दूर ज़रूरत के समय कम – चावल की खेती वाला ही सीज़न; साथ ही हल/बैल: 2 प्रति बीघा
› फैक्ट्री के पास किसानों को हटाने से टकराव हुआ; इसलिए उन्नीसवीं सदी के अंत तक निज में 25% से कम

उत्तर – बड़ी उपजाऊ ज़मीन की कमी, चावल के सीज़न से मज़दूर का टकराव, भारी हल की ज़रूरत (2 प्रति बीघा), और बेदखली का तनाव. नील की ज़मीन का 25% से कम हिस्सा निज के अंतर्गत था; बाकी रैयती.

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• दीवानी वाले 2-3 मार्क्स के सवाल में हमेशा तारीख (12 अगस्त 1765), रॉबर्ट क्लाइव/पेंटिंग का संदर्भ, और दीवान की आर्थिक शक्तियां – तीनों लिखो.

• अकाल के सवाल में हमेशा 'लगभग एक करोड़ / एक-तिहाई आबादी' का आंकड़ा ज़रूर लिखो – परीक्षक तथ्यात्मक सटीकता जांचता है.

• परिभाषा के सवाल में 'राजस्व स्थायी रूप से तय / कभी नहीं बढ़ेगा' लाइन ज़रूर लिखो – यही 'स्थायी' का मूल है.

• 'परमानेंट सेटलमेंट की समस्याएं' में हमेशा दोनों पक्ष लिखो – ज़मींदार/कंपनी की समस्याएं AND रैयत उत्पीड़न (कोलब्रुक स्रोत बोनस मार्क्स).

• तुलना तालिका बनाओ: परमानेंट | महालवारी | रैयतवाड़ी – साल, क्षेत्र, कौन चुकाता है, तय/संशोधन-योग्य – 5-मार्क्स का पसंदीदा.

• मुनरो के 'पितातुल्य रक्षक' विचार और 'गाँव वीरान हो गए' परिणाम – दोनों का कंट्रास्ट करके लिखने से ज़्यादा मार्क्स मिलते हैं.

• नील की मांग वाले सवाल में हमेशा वोड कंट्रास्ट + 1788/1810 प्रतिशत + औद्योगीकरण का ज़िक्र करो – हाई-स्कोरिंग तथ्यात्मक त्रिक.

• निज बनाम रैयती तुलना तालिका + 'निज में 25% से कम' का आंकड़ा + प्रति बीघा 2 हल – यह तीन तथ्यात्मक आधार परीक्षा में स्कोर दिलवाते हैं.

एक नज़र में रिवीज़न

› 12 Aug 1765 = Company Diwan of Bengal; Diwani = economic control + revenue responsibility.

› After 1765: Bengal money buys exports; crisis artisans flee, rents unpaid; 1770 famine 1 crore dead.

› 1793 Permanent Settlement: Cornwallis; zamindars collect rent; Company revenue fixed forever.

› High fixed demand auctions; later price rise helps zamindars not Company; raiyats insecure + indebted.

› Mahalwari 1822 (Mackenzie): survey mahal revenue revisable; headman, not zamindar.

› Ryotwari: Read Munro; direct with raiyat in South; high demand flight/desertion.

› Commercial crops for Europe; indigo beats woad; India 30% (1788) to 95% (1810) of Britain’s indigo imports.

› Nij = own land + labour (expand hard, <25%); Ryoti = satta with raiyats; 2 ploughs/bigha.